गुरु नानक - सबद ८०

जप तप संजम साधीऐ तीरथ कीचै वास ॥

राग सिरीराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५६

जप तप संजम साधीऐ तीरथ कीचै वास ॥
पुँन दान चंगिआईआ बिन साचे किआ तास ॥
जेहा राधे तेहा लुणै बिन गुण जनम विणास ॥१॥
मुँधे गुण दासी सुख होइ ॥
अवगण तिआग समाईऐ गुरमत पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
विण रासी वापारीआ तके कुँडा चार ॥
मूल न बुझै आपणा वसत रही घर बार ॥
विण वखर दुख अगला कूड़ मुठी कूड़िआर ॥२॥
लाहा अहिनिस नउतना परखे रतन वीचार ॥
वसत लहै घर आपणै चलै कारज सार ॥
वणजारिआ सिउ वणज कर गुरमुख ब्रहम बीचार ॥३॥
संताँ संगत पाईऐ जे मेले मेलणहार ॥
मिलिआ होइ न विछुड़ै जिस अंतर जोत अपार ॥
सचै आसण सच रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥
जिनी आप पछाणिआ घर मह महल सुथाइ ॥
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥
तृभवण सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥
सा धन खरी सुहावणी जिन पिर जाता संग ॥
महली महल बुलाईऐ सो पिर रावे रंग ॥
सच सुहागण सा भली पिर मोही गुण संग ॥६॥
भूली भूली थल चड़ा थल चड़ डूगर जाउ ॥
बन मह भूली जे फिरा बिन गुर बूझ न पाउ ॥
नावहु भूली जे फिरा फिर फिर आवउ जाउ ॥७॥
पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥

राजन जाणह आपणा दर घर ठाक न होइ ॥
नानक एको रव रहिआ दूजा अवर न कोइ ॥८॥६॥

सार: जिस संतोष के स्रोत की हम तलाश करते हैं, वह पहले से ही हमारे भीतर विद्यमान है, हमारे विचारों और इच्छाओं की परतों के नीचे छिपा हुआ है। हम अक्सर रिश्तों और भौतिक चीज़ों के ज़रिए अर्थ की तलाश करते हैं और उस चीज़ को नज़रअंदाज़ कर देते हैं जिसकी हम सचमुच चाहत रखते हैं। बोध हमारे भीतर की जागृति है जो तब उत्पन्न होती है जब हम अपने मन में शांति प्राप्त करते हैं जिससे हमें उन अंतर्दृष्टियों की खोज करने का मौका मिलता है जो हमेशा से हमारे भीतर रही हैं। यह यात्रा केवल किसी मंज़िल तक पहुँचने के बारे में नहीं है, यह उस चीज़ को अपनाने के बारे में है जो हमेशा हमारे भीतर मौजूद रही है।

जप तप संजम साधीऐ तीरथ कीचै वास ॥
कोई व्यक्ति जप, तप और अनुशासन का अभ्यास कर सकता है और तीर्थ स्थलों पर भी निवास कर सकता है।

पुँन दान चंगिआईआ बिन साचे किआ तास ॥
दान-पुण्य जैसे अच्छे कर्म, जब ईमानदारी के बिना किए जाते हैं तब उनका क्या मूल्य है।

जेहा राधे तेहा लुणै बिन गुण जनम विणास ॥१॥
जैसा बोओगे वैसा काटोगे, पुण्य के बिना जन्म व्यर्थ है। यह अनुस्मारक है कि जीवन में जो कुछ बोते हैं वही मिलता है इसलिए, गंभीरता से सोच-समझकर कर्म करें। (१)

मुँधे गुण दासी सुख होइ ॥
हे साथी, जब सद्गुण तुम्हारा सहारा बन जाता है तब शांति मिलती है। यह प्रतीक है कि आंतरिक चरित्र स्थायी सुख को पाना सुगम करता है।

अवगण तिआग समाईऐ गुरमत पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥
नकारात्मक गुणों को त्यागकर और ज्ञान के सार के अनुरूप मानसिकता को अपनाकर, व्यक्ति पूर्ण सामंजस्य प्राप्त करता है। (१)(विराम)

विण रासी वापारीआ तके कुँडा चार ॥
बिना पूँजी के व्यापारी चारों दिशाओं में देखता है। यह दर्शाता है कि जिन लोगों में आंतरिक स्पष्टता का अभाव होता है वह अक्सर स्वयं से बाहर मूल्य खोजते हुए भटकते रहते हैं।

मूल न बुझै आपणा वसत रही घर बार ॥
अपनी पूँजी के मूल्य से अनजान, उनका माल घर में ही पड़ा रहता है। इसका अर्थ है कि हमारे स्रोत का सार हमारे भीतर निहित है लेकिन बोध के बिना, यह अनदेखा रह जाता है।

विण वखर दुख अगला कूड़ मुठी कूड़िआर ॥२॥
व्यापार के सामान बिना, दुख साथ हो जाता है। झूठ बोलने वालों की मुट्ठी में छल रहता है। (२)

लाहा अहिनिस नउतना परखे रतन वीचार ॥
जब कोई रत्न का मूल्यांकन कर उस पर चिंतन करता है तब हर पल नया लाभ प्राप्त करता है। यह निरंतर आत्ममंथन का प्रतीक है जो जीवन को नये दृष्टिकोणों से समृद्ध करता है।

वसत लहै घर आपणै चलै कारज सार ॥
माल घर के भीतर ही स्थित होता है जिससे जीवन के उद्देश्य की पूर्ति होती है। यह प्रकाश डालता है कि आत्मा का सार विवेक में निहित है और इसकी खोज जीवन को पूर्णता प्रदान करती है।

वणजारिआ सिउ वणज कर गुरमुख ब्रहम बीचार ॥३॥
व्यापारी व्यापार में उसी तरह संलग्न होते हैं जैसे ज्ञानी, जीवों के रूप में निहित शाश्वत ऊर्जा पर चिंतन करके ज्ञान को मूर्त रूप देते हैं। इस संदर्भ में, व्यापारी और व्यापार का साधक और ज्ञानोदय की ओर उनकी आध्यात्मिक यात्रा के रूपक में प्रयोग किया गया है। (३)

संताँ संगत पाईऐ जे मेले मेलणहार ॥
प्रबुद्ध लोगों की उपस्थिति में यदि साधक उन लोगों के साथ जुड़ते हैं जो योग्यता के प्रतीक हैं तब गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। संत जागृत चेतना के प्रतीक हैं और उनकी संगति उन गुणों की प्रतीक है जो जागरूकता के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं।

मिलिआ होइ न विछुड़ै जिस अंतर जोत अपार ॥
एकता में संयुक्त और अलगाव से परे वह हैं जो अपने भीतरी अनंत ज्ञान को पहचानते हैं। यह दर्शाता है कि जब एक साधक इस आंतरिक तेज को खोज लेता है तब द्वैत की सारी भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं।

सचै आसण सच रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥
ईमानदार लोगों के लिए उनकी भक्ति का अभ्यास सत्यनिष्ठ रहना है और उनका प्रेम और भक्ति इस वास्तविकता के प्रति है कि सार्वभौमिक शक्ति ही सर्वव्यापी है। (४)

जिनी आप पछाणिआ घर मह महल सुथाइ ॥
जो लोग अपने सच्चे स्वरूप को पहचान लेते हैं वह पाते हैं कि शांति का निवास उनके अपने अंतःकरण में है।

सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥
जो सत्य से ओतप्रोत हैं वह सत्य को अपनी उपलब्धि के रूप में ग्रहण करते हैं। यह प्रकाश डालता है कि जो लोग ईमानदारी से जीते हैं वह पाते हैं कि ईमानदारी ही उनकी सबसे बड़ी दौलत है।

तृभवण सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥
अस्तित्व के सभी लोकों में, सर्वव्यापी को वास्तविकता के रूप में सत्य चिंतन के माध्यम से पहचाना जाता है। (५)

सा धन खरी सुहावणी जिन पिर जाता संग ॥

सच्चा सुखी साथी यह पहचानता है कि उसका प्रियतम हमेशा उसके साथ मौजूद है। यह अहसास इस बात पर ज़ोर देता है कि सार्वभौमिक शक्ति सर्वव्यापी और सदा उपस्थित है।

महली महल बुलाईऐ सो पिर रावे रंग ॥

साथी का अंतरतम महल में स्वागत होता है जहाँ प्रियतम आनंदपूर्वक सुख से रहता है। इससे पता चलता है कि जब गहन बोध प्राप्त होता है तब सार्वभौमिक शक्ति के साथ मिलन का उत्सव मनाया जाता है।

सच सुहागण सा भली पिर मोही गुण संग ॥६॥

सच्चा सुखी साथी वह है जो अपने गुणों से अपने प्रियतम का प्रेम जीतता है। यह दिखाता है कि हमारी सहज जागरूकता में वह गुण होता है जो हमें हमारे सच्चे स्वरूप से जोड़ता है। (६)

भूली भूली थल चड़ा थल चड़ डूगर जाउ ॥

अज्ञानता में, मैं रेगिस्तान के टीलों पर, पठारों पर और पहाड़ों पर चढ़ता हूँ। यह प्रतीक है कि बिना ज्ञान, साधक संसार के भ्रमों में खोया भटकता रहता है।

बन मह भूली जे फिरा बिन गुर बूझ न पाउ ॥

अज्ञानता में, भले ही मैं जंगल में भटकता रहूँ, आध्यात्मिक ज्ञान के बिना मैं अपने सार को नहीं समझ सकता। इससे पता चलता है कि आंतरिक जागरूकता के बिना जीवन का असली उद्देश्य अधूरा रहता है।

नावहु भूली जे फिरा फिर फिर आवउ जाउ ॥७॥

यदि मैं चिंतन को भूलकर भटकता रहूँ तब मैं उन्नति-अवनति के चक्रों में फँसकर अनंत काल तक उलझा रहूँगा। यह इंगित करता है कि स्थिर आधार की कमी से बार-बार दुखों का चक्र बन जाता है। (७)

पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥
अध्यात्म के पथ पर चलने वाले किसी भी यात्री से पूछें कि वह एक विनम्र उपासक के रूप में कैसे आगे बढ़ते हैं।

राजन जाणह आपणा दर घर ठाक न होइ ॥
जो लोग उस सम्राट को अपने भीतर सर्वव्यापी शक्ति के रूप में पहचानते हैं उन्हें कोई भी रूकावट नहीं मिलती जो उनके विवेक या उनके सच्चे स्वरूप को बाधित कर सके।

नानक एको रव रहिआ दूजा अवर न कोइ ॥८॥६॥
नानक कहते हैं कि केवल एक ही सर्वव्यापी ऊर्जा सर्वत्र व्याप्त है कोई दूसरा नहीं है। यह इस सत्य की पुष्टि है कि संपूर्ण सृष्टि एक ही पारस्परिक तंत्र है। (८)(६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि बिना किसी स्थिर आधार के हम जीवन में भटकते रहते हैं, दुख और भ्रम के चक्रों में फँसे रहते हैं। चिंतन के बिना, हमारा मन हर भावनात्मक तरंग पर प्रतिक्रिया करता है जिससे हम आंतरिक स्थिरता खो देते हैं। स्थिर आधार, स्पष्टता के लिए आवश्यक शक्ति के रूप में विनम्रता प्रदान करता है ताकि हम उन रुकावटों से मुक्त हो सकें जो हमारे सच्चे स्वरूप से हमारे संबंध में बाधा डालती हैं। जैसे-जैसे हानिकारक प्रवृत्तियाँ मिटती हैं, हम सार्वभौमिक ऊर्जा के साथ एकाकार होने की समझदारी को पुनः प्राप्त कर लेते हैं।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com